Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

इतिहास शिक्षण की आवश्यकता अवधारणा और महत्व पर एक अध्ययन

डॉ.विजय कुमार
समाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मिथिला वि., दरभंगा
Email: vijaykr1882@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180223
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 121-124
February - 2026
Submitted: 17 Jan. 2026
Revised: 27 Jan. 2026
Accepted: 12 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाष डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। वस्तुनिष्ठता आधुनिक वैज्ञानिक विधा की विषेषता है। इसका अभिप्राय यह है कि कई वैज्ञानिक समुचित विधि था नियमों के आधार पर प्रयोगषाला में सिद्ध करता है तो उस गवेषण को सभी वैज्ञानिक स्वीकार करेगें। इतिहासकार अतीत का वर्णन तटस्थ भाव से पूरी तरह उदासीन होकर अपने परिवेष, विचारधारा, वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित हुये बगैर करे यह अपने आप में एक अहम् सवाल है कि क्या इतिहासकार अतीत के क्रिया, कलापों का इस तरह पूरी निष्पक्षता के वर्णन कर सकता है। या नहीं इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण–दोषों को देख पाते है जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे है। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का षिक्षण व अध्ययन की महती आवष्यकता है। इतिहास नामक षिक्षा–षाखा की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। इसका उद्‌गम बौद्विक कार्य–व्यापार के महान उद्वेग की एक अभिव्यक्ति के रूप में हुआ। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद–विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। मानव समाज के कल्याण के लिए विषाल इतिहास को भूलाया नहीं जा सकता है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास की सुरक्षा के लिए सदैव पत्पर रहना चाहिए।

मूल शब्द : *इतिहास की आवष्यकता, आधुनिक षिक्षण, विद्यालयी षिक्षा, अवधारण, उददेष्य, महत्व और उपादेयता।*

भूमिका

इतिहास मानव जीवन के समस्त क्रियाओं पर प्रकाष डालने वाला एक कथ्य या कहानी है। जिसमें मानव के समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण–दोषों को देख पाते हैं जो मानव के द्वारा सम्पदित किये जाते रहे है। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का षिक्षण व अध्ययन की महती आवष्यकता है। इस विषय की आवष्यकता, अवधारणा, उद्‌देष्य, महत्व तथा उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। इतिहास विषय के महत्व और उपयोगिता को ध्यान में रख इतिहास विषय के अध्ययन पर बल देकर कार्य करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य हैं। हीगेल ने भी इतिहास को सराहनीय विषय माना है। एक फ्रांसीसी विद्वान रेनन ने लिखा है कि इतिहास का अध्ययन राष्ट्रीयता के लिए उपयुक्त होता है। मानव समाज के कल्याण के लिए विषाल इतिहास को भूलाया नहीं जा सकता है, क्योंकि यह भी सत्य है कि अपने इतिहास को भूलने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नहीं होता हैं अतः भविष्य निधि के रूप में इतिहास विषय का अध्ययन व षिक्षण की व्यवस्था आवष्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार–ढंग से निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक षिक्षा–षाखा की उत्पति सर्वप्रथम युनान में मिलती है। इसका उद्‌गम बौद्विक कार्य–व्यापार के महान उद्वेग की एक अभिव्यक्ति के रूप में हुआ। परीक्षा सिद्ध के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विषेषज्ञ के द्वारा वाद–विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद–विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इतिहास शब्द से उनका अभिप्राय खोज तथा अनुसधान था। युनानी जाति की ज्ञान–पिपास हिस्ट्री की परिभाषा में प्रस्फुटित हो उठीं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.विजय कुमार, समाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मिथिला वि., दरभंगा

How to cite this article:
कुमार, . विजय . (2026). इतिहास शिक्षण की आवश्यकता अवधारणा और महत्व पर एक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 121–124. https://doi.org/10.5281/zenodo.18933974

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18933974
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्‌गम स्थल प्राच्य संस्कृति का केन्द्र युनान रहा है। महान यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने इतिहास लेखन की आधारषिला का निर्माण किया जिसे थ्यूसिडिडीज ने विकसति किया। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया है। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाष डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीण और व्यापक अर्थो का विवेचन करेंगे।

इतिहास का शाब्दिक अर्थ

इतिहास संस्कृत भाषा के तीन शब्दों से मिलकर बना है अर्थात इति+ह+आस। 'इति' का अर्थ होता है ऐसा ही, 'ह' का अर्थ होता है निष्चित रूप से और 'आस' का अर्थ होता है 'था'। इस प्रकार शाब्दिक व्युत्पत्ति के अनुसार इतिहास का अर्थ हुआ, 'जो निष्चित रूप से ऐसा ही था'। दुसरे शब्दों में हम ये कह सकते है कि जो घटनाएँ भूतकाल में घटी हैं और जो निष्चित तथा सत्य है उन्हीं के क्रमबद्ध था विवेचनात्मक विवरण को हम इतिहास कहते है। शाब्दिक व्युत्पति के आधार पर हम इतिहास का व्याख्या इस प्रकार भी कर सकते है व्याख्या के अनुसार इतिहास केवल दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात 'इतिह+'आस। इतिहास अव्यय शब्द है और इसका अर्थ होता है जो परंपरा के अनुरूप ही या उपदेष परंपरा, देष से सुना जाने वाला उपदेष या युना सुनाया अच्छा और सत्य वचन। इस आधर पर हम कह सकते है। कि इतिहास उन घटनाओं को कहते है जो परंपरा के अनुकुल हो अर्थात इतिहास उन ग्रंथों को कहते है जिसमें बीते हुए काल की प्रसिद्ध घटनाओं और तत्कालीन प्रसिद्ध पुरूषों का वर्णन हो जिनके अध्ययन से लोगों का उत्तम षिक्षा प्राप्त हो। स्वर्गीय चतुर्वेदी, द्वारिका प्रसाद शर्मा और पंडित तारिणीष झा ने संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में इतिहास को 'इतिहास का अर्थ बतलाते हुए लिखा है कि इतिहास वह ग्रंथ है जिसमें धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्ष का उपदेष प्राचीन कथानकों से युक्त हो। संभवतः यही कारण है कि हमारे आचार्यो ने इतिहास पुराण' के नाम से संबोधित किया था इस प्रकार जो ग्रंथ पौराणिक कथाओं से युक्त रहते थे और बड़े ही उपदेषात्मक होते थे उन्हें को इतिहास के नाम से पुकारा जाता था।

इतिहास शब्द की एक तीसरी व्याख्या भी हो सकती है। इस व्याख्या के अनुसार इतिहास दो शब्दों से बना है, अर्थात, 'इति+'हास'। इति का अर्थ होता है अंत अथवा समाप्ति ओर 'हास' का अर्थ होता है हँसी, खेल या मजाक। इस तीसरी व्याख्या के अनुसार वे घटनाएँ जो हँसी, मजाक की है और जिनका जीवन में अधिक महत्व नहीं है और बीत चुकी है यानि जिसका अंत हो चुका है, वही इतिहास है। हमारे विद्वान, मनीषी, भौतिक वस्तुओं को नष्वर तथा हँसी खेल की चीज समझते थे। अतः वे उन्हें कोई बड़ा महत्व नहीं देते थे। वे केवल आध्यात्मिक तत्वों को शाष्वत मानते थे और उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे राजनीतिक तथा अन्य भौतिक घटनाओं को वे हँसी–खेल समझते थे। अतः इस प्रकार की भूतकाल की घटनाओं के क्रमबद्ध विवेचन को उन्होंने इतिहास की संज्ञा दी है। न केवल हमारे, विद्वानों और इतिहासकारों ने बल्कि पाष्चात्य विद्वान महाकवि शेक्सपियर ने भी मनुष्य के भौतिक जीवन की नष्वतरता तथा निस्सारता की ओर इंगित करते हुए लिखा। हैं। "जीवन एक चलती फिरती छाया मात्र है, यह एक दीन–हीन अभिनेता है, जो रंगमंच पर मात्र क्षणिक खेल–कूद करता है, और फिर सदा के लिए विलीन हो जाता है। मानव जीवन मूर्खो द्वारा कथित एक कहानी है जिसका कोई अर्थ नहीं होता। मुगल सम्राट अकबर ने भी भौतिक जीवन की नष्वरता पर प्रकाष डालते हुए फतेहपुर के बुलंद दरवाजे पर जो पंक्तियाँ अंकित करवाई हैं। उसका सार निम्न प्रकार है। "यह संसार एक बाँध की भाँति है, उसे पार करना प्रत्येक मानव का पुनीत कर्तव्य हैं इस बाँध के उपर सज्जन लोक वास नहीं करते है। यह जिन्दगी कुछ क्षणों का है, इसलिये एक क्षण गवॉये बगैर भगवान के पूजन अर्चन में इसे सदा लगाना चाहिए।

इतिहास का संकीर्ण अर्थ

संकीर्ण अर्थ इतिहास राजवंषों के उत्थान और पतन की कहानी मात्र है। इस दृष्टि में इतिहास का संबंध केवल राजनीतिक जीवन से रहता है और इतिहास का विषेष क्षेत्र राजाओं, महाराजाओं के शासन, उनकी नीति तथा उनके द्वारा किये गये युद्धों की कहानी मात्र है। विद्वान इतिहासकार फ्रीमैन महोदय ने इसी संकीर्ण अर्थ में इतिहास की परिभाषा करते हुए लिख है। "इतिहास अतीत के राजनीति के सिवा कुछ भी नहीं है और राजनीति वर्तमान के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसी अर्थ के इतिहास का प्रयोग करने के कारण प्रायः सभी देषों का इतिहास विभिन्न राजवंषों के उत्थान एवं पतन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणार्थ–अर्वाचीन इंग्लैण्ड के इतिहास को ट्यूडर, स्टुअर्ट तथा हैनोवर राजवंषों ने इतिहास में विभक्त किया था। हमारें देष भारत में प्राचीन इतिहास को मौयवंष, शुंगवंष, कुषाणवंष आदि राजवंषों के इतिहास में और मध्यकालीन भारतीय को गुलामवंष, खिलजी वंष, तुगलक वंष, सैयद वंष, लोदी वंष, तथा मुगलवंष के इतिहास में विभक्त किया गया या जाता है। और इस विष्व के अन्य देषों का भी इतिहास लिखने की इसी प्रकार की परंपरा रही है और इस प्रकार के इतिहास को राजवंष के उत्थान तथा पतन का कहानी मात्र कहना सर्वथा उचित प्रतीत होता है, लेकिन इतिहास को मात्र राजनीतिक जीवन तथा राजवंषों के उत्थान–पतन के संकीर्ण क्षेत्र में सीमित करना समीचीन नहीं प्रतीत होगा। अस्तु इसके व्यापक अर्थ पर प्रकाष डालना नितांत जरूरी है।

इतिहास का व्यापक अर्थ

व्यापक अर्थ में इतिहास के अंतर्गत न केवल राजनीतिक और राजवंषों का उत्थान और पतन समाविष्ट रहता है बल्कि इसके अन्तर्गत उसका समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सभी प्रकार के जीवन के विचार तथा क्रियाकलप सम्मिलित रहते हैं और न केवल राजवंषों वरन जनसाधारण के भी जीवन का कहानी सम्मिलित रहती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि "इतिहास वह सामाजिक शास्त्र है जो हमें भूतकाल के लोगों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का परिचय कराता है।" अतः व्यापक अर्थ में इतिहास का अर्थ अतीत के उन क्रिया–कलापों से है जिसके अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेष किया गया।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

इतिहास षिक्षण की आवष्यकता एवं आधुनिक अवधारण

इतिहास षिक्षण की आवष्यकता पर बल देते हुऐ इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है कि मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावष्क है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देष के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था, तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं, वरन राजनति शास्त्रियों तथा दार्षनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास का प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा ।आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकित शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विष्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है, जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविक का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

शैक्षिक महत्व

शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी षिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत, पुष्पित पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व, बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारषिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्षन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा है कि 'मनुष्य इतिहास से वह षिक्षा प्राप्त करता है, जो अन्य विषयों में अप्राप्त हैं।

व्यावसायिक महत्व

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं है। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों, संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त कर सकते है। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान वरदान हैं प्रषासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता करता है क्यों कि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रषासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

नैतिक महत्व

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि यह नैतिकता की षिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विष्व के तमात महापुरूषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परोसकर उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढ़ाता है। इसके अतिरिक्त इतिहास अध्ययन के माध्यम से छात्र विष्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्षन से परिचित होता हैं तथा उनके आदर्षो को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

अनुषासनात्मक महत्व

इतिहास विषय का अनुषासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्यिां प्रषिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटनाओं के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते है तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते है। इतिहास पुरूषों की जीवनी से छात्र अनुषासन, समय की उपयोगिता, आचरण आदि की बातों को सीखाता है।

सांस्कृतिक महत्व

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योकि यह मानव मस्तिक एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एवं प्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन के छात्र अपने देष की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते है। और उसके कमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते है। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्ति, अपनी रीति–रिवाज, अपनी प्रथाओं, अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता –संस्कृतिक के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृतिक प्राप्त हुई है, इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण

इतिहास की उपादेयता सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं यह विष्व की भिन्न सभ्यताओं के सांस्कृतिक जीवन की जानकारी हमें देता है। जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लाभदायक है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का षिक्षण व अध्ययन की महती आवष्यकता है। इस के उद्देष्य अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। इतिहास विषय के महत्व और उपयोगिता को ध्यान में रख कर इतिहास विषय के अध्ययन पर बल देकर कार्य करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य हैं। हीगेल ने भी इतिहास को सराहनीय विषय माना है। एक फ्रांसीसी विद्वान रेनन ने लिखा है कि इतिहास का अध्ययन राष्ट्रीय के लिए उपयुक्त होता है। मानव समाज के कल्याण के लिए विषाल इतिहास को भूलाया जा सकता है। क्योंकि यह भी सत्य है कि अपने इतिहास को भूलने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नहीं होता

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

है। अतः निधि के रूप में इतिहास विषय का अध्ययन व षिक्षण की व्यवस्था आवष्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. गोविन्द चंद्र पाण्डे :– 1973, इतिहास स्वरूप एवं सिद्धांत, जयपुर,
2. बुद्ध प्रकाष 1968, :– इतिहास दर्षन, जालंधर, यूनिवर्सिटी पब्लिषर्स,
3. आर. सी. :– (स.) हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑव इण्डिन पीपुल जिल्द–1, वैदिक एज,
4. आर. के.मुकर्जी :– 1965, एंषियंट हिस्ट्री, इलाहाबाद,
5. एल. डिकिंसन, :– एन एसे ऑन सिविलाइजेषन ऑफ इण्डिया, चाइना, जापान,
6. इंटरव्यू विघ एम. एम., :– जोषी, मिनिस्टर ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एंड डेवलपमेंट इन शर्मा 2002
7. हीरानन्द शास्त्री, :– अध्यक्षीय भाषण, आल इण्डिया ओरिएण्टल कांफ्रेंस, पटना
8. गोविन्द चन्द्र पाण्डे :– 1973, इतिहास स्वरूप एवं सिद्वांत, जयपुर